म महानतम है।

अशोक के प्रारम्भिक जीवन :- अशोक के प्रारम्भिक जीवन के विषय में उसके अभिलेखों से विशेष जानकारी नहीं मिलती है। ~~इसलिए~~ इसलिए साहित्य पर ही निर्भर करना पड़ता है। बौद्ध ग्रन्थों में अशोक के जीवन और कृतित्व पर पर्याप्त प्रभाव डाला गया है, यद्यपि इनके वर्णन काल्पनिक और अतिशयोक्तिपूर्ण है। अशोक के सम्बन्ध में अनेक गाथाएँ महावंश, दीपवंश, दिव्यावदान, अशोकावदान आदि में मिलती है। बुद्धघोष की रचनाएँ 'समन्तपासादिका' और 'सुमंगल विलासिनी' भी अशोक के जीवन पर प्रकाश डालते है। ब्राह्मण धार्मिक साहित्य -

Scanned with CamScanner

②

में केवल पुराणों में अशोक का उल्लेख है। धर्मेत्तर साहित्य में फाह्यान और युवान च्वांग के वर्णनों में तथा कल्हणकृत राजतरंगिणी में अशोक का उल्लेख है।

अशोक का जन्म और प्रारम्भिक जीवन के विषय में भी साहित्यिक साक्ष्यों में एकरूपता नहीं है। राजतरंगिणी अशोक को ~~शकुनि~~ शकुनि का पौत्र बतलाता है। दिव्यावदान में उसकी माता का नाम 'जनपदकल्याणी' बताता है जबकि महावंश के अनुसार 'धर्मा' और अशोकावदान के अनुसार 'सुभद्रांगी' था। महावंश के अनुसार बिन्दुसार की सोलह रानियाँ और एक सौ एक पुत्र थे। उनमें अशोक ~~और उसके भाई~~ प्रतिभाशाली और कुशाग्र बुद्धि का था। वह अपने 99 भाईयों को मारकर गद्दी पर बैठा था। दिव्यावदान में अशोक और उसके भाई सुमन के बीच उत्तराधिकार-युद्ध का उल्लेख है। अशोक के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि वह अपने सम्बन्धियों के प्रति उदार था और उनकी सुख सुविधा का पूरा ध्यान रखता था। उसने अपने भाई तिष्य को उपराजा नियुक्त किया था। परन्तु इतना सत्य ~~प्रतीत~~ प्रतीत होता है कि अशोक को सिंहासन के लिए संघर्ष करना पड़ा क्योंकि महावंश में अशोक द्वारा राज्य की प्राप्ति और उसके अभिषेक में चार वर्ष का अन्तर बताया गया है।

बिन्दुसार के समय में अशोक अवन्ति राष्ट्र का राज्यपाल रह चुका था। वहाँ उसका महादेवी नाम की शाक्यकुलीन विदिशा की राजकुमारी से विवाह हुआ। उसी की सन्तान अशोक का पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा थे।

Scanned with CamScanner